वापस पुराने दिनों में लौट जाती हूँ। आज भी कानन, खुर्शीद, शांता आप्टे और दुर्रानी आदि के दुर्लभ गीतों का खज़ाना अगर है तो सिर्फ रेडियो सीलोन के पास। मलिका पुखराज, कमला झरिया और बेगम अख्तर से लेकर इकबाल बानो तक से परिचित कराया रेडियो सीलोन ने हमें। सच तो ये है कि हम अगर कानसेन बने तो इसी रेडियो सीलोन की बदौलत।

तो हम यानी रेडियो सीलोन और मैं साथ-साथ बड़े होने लगे। 1952 में मिडिल बोर्ड की तैयारी थी कि रेडियो सीलोन ने एक नया धमाका - पेश कर दिया। बिनाका गीतमाला एक ऐसा प्रोग्राम आया कि बच्चे, बूढ़े, सब एक-एक कर उससे जुड़ते चले गए। हर एक की जुबान पर यही सवाल कि अब के बुधवार टॉप पर कौनसा गीत होगा। अजी साहब इस पर शर्तें लगने लगी, कयास लगाये जाते, हार-जीत होती और बुधवार शाम 8 बजे जैसे पूरे शहर में कर्फ्यू लग जाता ठीक वैसे ही जैसे बाद में रामायण या महाभारत सीरियलों के वक्त हुआ करता था। उस वक्त कोई भूला-भटका अतिथि आ जाता तो समझिये घर भर की पेशानी पर शिकन पड़ जाती। आते ही चाय, शरबत पूछ कर फटाफट निपटा दिया जाता और सबके कान अमीन सयानी कि आवाज़ से जा चिपकते।

अमीन सयानी की आवाज़ को क्या कहूं , कभी अमेरिका में एक सभा को संबोधित करते हुए हमारे संत विवेकानंद ने कहा था ब्रदर्स एंड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका - ठीक उसी को हिंदी में लेकर अमीन सयानी ने अपना ट्रेडमार्क बना डाला - तो भाइयों और बहनों, की वो आवाज़ कान में बांसुरी सी गूंजने लगी। एक जाने माने लेखक ने तो पूछ ही लिया - बोलो अमीन भाई , खोलो ये राज़ , आवाज़ का जादू हो या जादू की आवाज़

तो अमीन सयानी ने बुधवार का दिन स्पेशल बना दिया हर संगीत प्रेमी के लिए। इंतजार में कटते बाकी दिन , एक अजीब उत्साह से भरे।

एक ऐसे ही बुधवार को हमारे घर कुछ खास मेहमान आये और शाम खाने पर उनकी आमद निश्चित की गयी। हमारा सम्मिलित परिवार था। हम कई सारी चचेरी फुफेरी बहनें सब बिनाका गीतमाला की दीवानी, उस दिन बेहद उदास और मायूस थी। आज साल भर जो जो गीत सबसे ऊँची पायेदान पर रहे थे, वे ही बजने वाले थे

> उधर अमीन सयानी ने घोषणा की – जी हाँ भाइयों और बहनों ये रहा वह गीत – जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो...हम इतना ही सुन पाए थे कि उधर से छोटे चाचा जोर से चिल्लाये– अरे कोई है, सब के सब कहाँ गुम हो गए? रोटी नहीं है दादाभाई की थाली में ....

और सबसे ज्यादा कौन सा गीत बजा उसकी घोषणा भी होने वाली थी। सहेलियां इसका लेखा जोखा रखती थीं। कई बार गानों की गुणवत्ता पर बहस भी हो जाती और झगड़े भी। लेकिन आज तो घोषणा का दिन था, रिजल्ट आने वाला था और आज ही ये मुआ कौन था जिसे हमारे घर खाने की इच्छा ने सता डाला था। हम सब परेशान थे। हमारे परिवार के कुछ नियम थे, खाना लड़कियां ही परोसेंगी। घर के सब मर्द मेहमानों के साथ बैठ कर खाते और देर तक गप्पें लगतीं। लड़कियों से ये उम्मीद की जाती कि जिसकी थाली में जो चीज़ कम हो वो बिना मांगें परोसी जाए। रोटी गरम गरम जरा दूर पर स्थित बड़ी सी रसोई से दौड़ दौड़ कर लाना लड़कियों का ही काम था। तो हम उम्र 4 बहनें इस काम पर लगा दी गयीं। सब ठीकठाक चल रहा था। पास के कमरे में भाइयों का मान मनौवल कर रेडियो सीलोन चालू करवा दिया गया था। वह दिन खास जो था मिस कैसे करते? हम पूरे मनोयोग से काम कर रहे थे पर कान रेडियो कि आवाज़ पर ही लगे थे यानी अमीन सयानी कि आवाज़ पर। 9 बजने को थे साल भर का सरताज गीत बजने वाला था। रेडियो से आवाज़ उभरी, दम रोक कर बैठें, अब बिगुल बजेगा और साल भर के गीतों का सरताज गीत आपके साथ होगा। गीत ये है- हम सब खाना परोसना भूल कान लगाये खड़े थे। उधर अमीन सयानी ने घोषणा की - जी हाँ भाइयों और बहनों ये रहा वह गीत - जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो...हम इतना ही सुन पाए थे कि उधर से छोटे चाचा जोर से चिल्लाये- अरे कोई है, सब के सब कहाँ गुम हो गए? रोटी नहीं है दादाभाई की थाली में ....

वो गीत ज़रूर बजता रहा होगा , बाद में भी हजारों बार बजा होगा पर उस वक्त तो हम सब हाथ में तश्तरियां लिए एक साथ रसोईघर की ओर दौड़ पड़े थे। वो गाना आज भी सुनती हूँ तो बिनाका गीतमाला, अमीन सयानी और चाचा की गुस्से से भरी पुकार सब आपस में मिलकर फिज़ा में फैल जातीं हैं। सच है जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात .. ■